[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 1345 **D** **Your Roll No.....**

Unique Paper Code : 205401

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Name of the Paper : Aadhunik Kavita – I
आधुनिक कविता – I

Semester : IV

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमाक लिखिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** काव्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये : (8+8)

(क) उठ उठ गिर गिर फिर-फिर आती,
नर्तित पद चिह्न बना जाती,
सिकता की रेखायें उभार-
भर जाती अपनी तरल-सिहर !
तू भूल न री, पंकज वन में,
जीवन के इस सूनेपन में,
ओ प्यार-पुलक से भरी ढुलक।
आ चूम पुलिन के बिरस अधर !

(ख) तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा
पत्थर की, निकलो फिर,
गंगा जल-धारा !
गृह-गृह की पार्वती !

पुनः सत्य-सुन्दर-शिव को सँवारती

उर-उर की बनो आरती !

भ्रान्तों की निश्चल ध्रुवतारा !

तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा !

(ग) देव ! तुम्हारे कई उपासक कई ढंग से आते हैं

सेवा में बहुमूल्य भेंट वे कई रंग की लाते हैं

धूमधाम से साज-बाज से वे मंदिर में आते हैं

मुक्तमणि बहुमूल्य वस्तुएँ लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं

मैं ही हूँ गरीबनी ऐसी जो कुछ साथ नहीं लाई

फिर भी साहस कर मंदिर में पूजा करने को आई

(घ) उठती हुई जवानी इसकी

कितनी ताने टूट रहीं

इसकी अमर उमर दुनिया में

अनुपम रहीं, अटूट रहीं !

रस, कि राग का विष इससे

मत माँगो यह अलमस्त खड़ा !

सिर पर पाग, आग हाथों में

रख पानी का घड़ा

जवानी, तेरा प्रियतम खड़ा !

2. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) उद्घाटित कीजिये : (7+7)

(क) **निर्देश : आदमी के विविध रूप**

दुनिया में बादशाह है सो है वो भी आदमी

और मुफलिस-ओ-गदा है सो है वो भी आदमी

ज़रदार बेनवा है सो है वो भी आदमी

नेमत जो खा रहा है सो है वो भी आदमी

टुकड़े जो माँगता है, सो है वो भी आदमी

(ख) **निर्देश : युद्ध की विभीषिका**

झुकते किसी को थे न जो नृप-मुकुट रत्नों से जडे,

वे अब शृगालों के पदों की ठोकरे खाते पड़े।

पेशी समझ माणिक्य को वह विहग देखो, ले चला,

पड़ भोग की ही भ्रांति में संसार जाता है छला ।।

(ग) **निर्देश : प्रकृति-सौन्दर्य**

दिनमणि पश्चिम की ओर क्षितिज के ऊपर,

थे घट उँड़ेलते खंड़े कनक के भू पर।

लालिमा बहा अग-जग को नहलाते थे,

खुद भी लज्जा से लाल हुए जाते थे।

(घ) **निर्देश : प्रेमानुभूति**

आई याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,

आई याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,

आई याद कांता की कम्पित कमनीय गात,

फिर क्या ? पवन

उपवन-सर-सरित गहन-गिरि-कानन

कुंज-लता - पुंजों को पार कर

पहुँचा जहाँ उसने की केलि

कली-खिली साथ !

3. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये : (3×15=45)

(क) नज़ीर अकबराबादी ने कविता लिखी नहीं है, कविता कही है ।' - इस दृष्टि से उनकी काव्यभाषा पर टिप्पणी कीजिए ।

(ख) 'प्रसाद-काव्य में छायावाद की तमाम विशेषताएँ मौजूद हैं ।' - इस कथन के आलोक में प्रसाद के काव्य का मूल्यांकन कीजिए ।

(ग) निराला की कविता में व्यक्त प्रगतिशील चेतना पर प्रकाश डालिए ।

(घ) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा में सुभद्रा कुमारी चौहान के योगदान की चर्चा कीजिए ।

(ङ) मैथिलीशरण गुप्त की काव्यकला का मूल्यांकन कीजिए ।

(च) रश्मिरथी के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए ।